

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

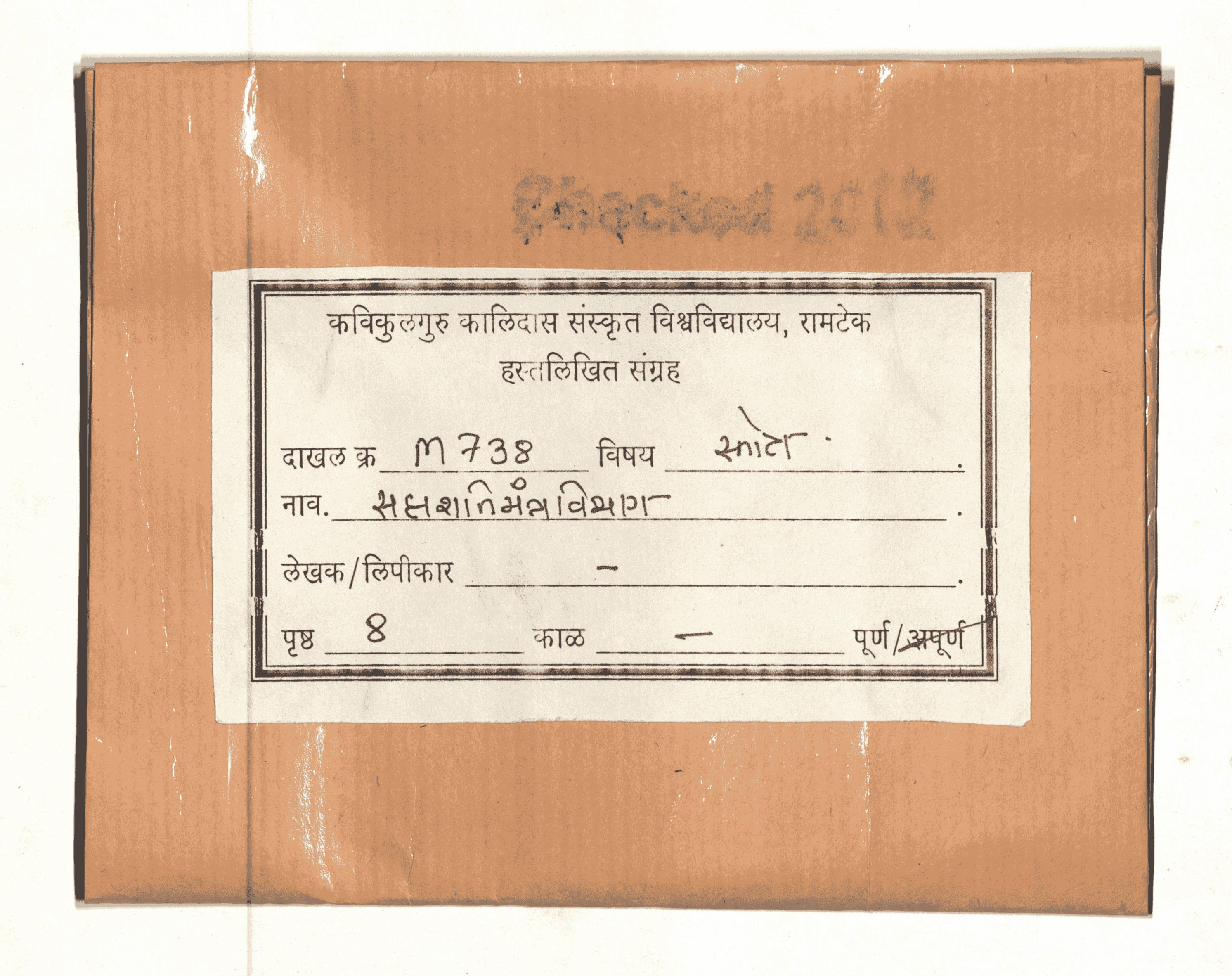
https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/



गनीमाने सायनमः॥सरीवः पातुसिन्न वः केरावादिस्व प्यान्॥अ छाप द इसे ने क बटकां गद्र प्यान्॥ विव्यं निर्धिष्ठ कतीरं दु दित प्रस्म तिः स्तवं॥ वंदे विव्य धिपे वे प्रसन्त करणा जी वे ॥ अष्टस्व स्तरा जो खा का नो रात्यं व वं ॥ प्रोत्यं स्तरा जी स्ता वे तत्स प्र नात सं स्वया॥ चिन्द्र सहस्ता वे के सावणी घाः स्ततः परे॥ मार्वेदे यह वा चे के सावणी घाः स्ततः परे॥ खोबमंत्रासपदमाअर्ध खोकात्मक छ नः॥एकान वित्रादेवं स्यु वे स्यानि वित्रा निस्त्राथा।।५॥ प्रनर्धे प्रनन्छो करत्रयम धंप्रनर्भवित्र॥ पंचित्रा ति रेवस्या का जा पित्र तिस्त्राथा। प्राचित्र ति रेवस्या का जा पित्र तिस्त्राथा। प्राचित्र ति स्था का नित्र वेत् ॥ प्रकान वित्र ।। प्

अर्धकाकात्मकोमेशराजार्धकाकमेश कः भंगश्राकारिषदेवक्को क्रमेश्वराष्ट्र ये ॥ १९॥ पुनरर्धे स्वीश्रार्धकाक्षमेशः पुन रित्रा ॥ पुनरर्धे पुनको का अपनर्धे पुनको का अपनर्धे पुनको का अपने सः यो १९०० । पुनरर्धे पुनको काः वणमेशः पुनर्धका ॥ पुनर्धे पुनको काः वणमेशः पुनर्धका ॥ पुनर्धे पुनको काः वणमेशः पुनर्धका ॥ पुनर्धे पुनको का विस्त्रोर वको ने नसः प्रभुः ॥ देवे वं पादो मेशणो मे कस्त्र ति स्वीते ॥ १२॥ विस्त्री विस्त्रोरं मेशे थ खोबमंत्राख्यादशा।अर्धकोबारूषी यार्धकोकाकाकाक्ष्मं यथे।।१४॥एनर र्थत्मं त्रणासपंचन यिता।।भगणा नर्धमं वेदेक्षी खोकार्धके छनः।।१४०।का कः एनाक्षिकोबहपंमं वह्यं भवेत्।। खोकानामष्टसप्या ययत् किर्धिक राते।।१५॥उग्यवयनेः सार्थि विभागप्रभा मतः।।मार्के डेयह ये वे स्यह्यं राजाव ये तथा।।६॥ क्षिपंचक्षिह् छन्। गवी ।।१०

ने कर्वत्। ब्रह्मेकत् चत् वित्रद्धं मंत्रः प्रक्रीतिताः। १७॥ उवा चप्रमध्यस्त्राका द्वारशक्ष्यपे। अध्याद्वेव वर्षित्वा च तिस्क्रम्यस्था । अध्याद्वेव वर्षित्वा च कात्वं तो प्रवास्त्रः। १० का वर्षा तिः सर्वध्याये मंत्रादितीयके। १९॥ को के च्या रिश्च द्वार्थे ध्याये ततीयके। १९॥ को के च्या रिश्च द्वार्थे ध्याये ततीयके। १९॥ को क्रिया ने कप्रवास्त्रित्वा सर्वे। १०॥ विह्न्यमा नी या को कास्त्रित्वा सर्वे। १०॥ विह्न्यमा नी या को कास्त्रित्वा सर्वे। १०॥ विह्न्यमा देखानी को गर्ज गर्ज ति चापरः॥ देना को को स्थित गर्ज ति प्रमुखान पंच दे।। च खु ख्यारिषत स्कु सर्व मंगति पदे।। । स्थाल गर्ज स्थित गर्ज ति ग्रामाणः को का मंत्रकाः॥ पितृ गाख्य स्थिः को ज्ञ प्रपेदे वी ततः परे।। स्था खियां। विद्याः सर्व प्र देखा जानि गो छितं।। इस र्य को का मंगण देवा उद्य स्तातः प्रमः।। स्ता १४ ग्रामा स्ता सर्व विसर्ध को का मंगकः।। यद यिने ह्ला

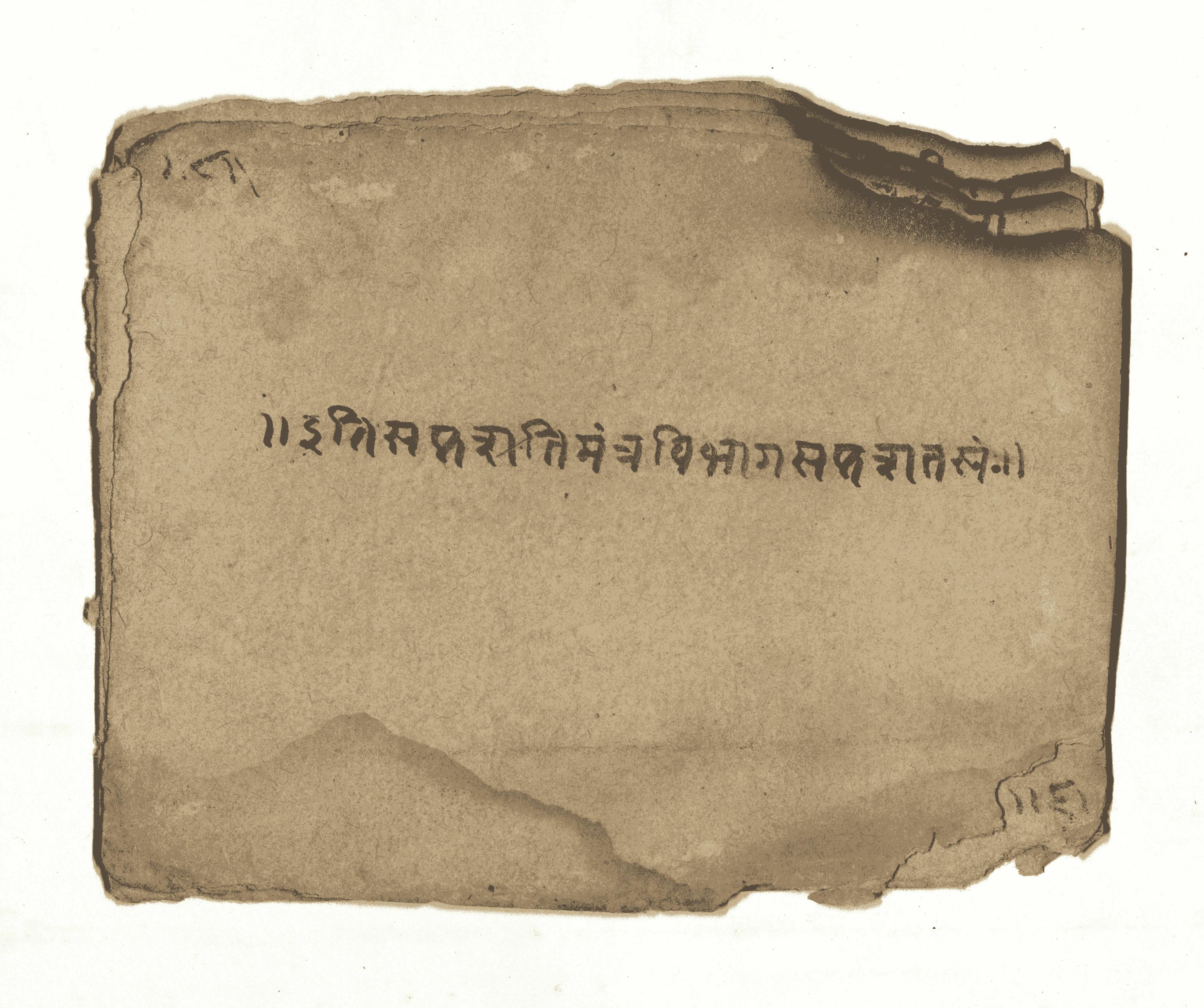
विचक्षान्य वर्ष प्रवेत । स्ति का स्वास्त्र वर्ष । स्ति वर्ष प्रवेद व्यक्त एकंदे वा स्त्र पंचित्र शास्त्र । स्ति वर्ष प्रवेद व्यक्त एकंदे वा स्त्र पंचित्र शास्त्र । अधिका का त्यने का का पंचित्र शास्त्र । अधिका का त्यने का कद भागे वर्षा है । स्था पद विष का कद भागे वर्षा है ना दिन । स्वास का वर्ष प्रवेद के भागे वर्ष है । स्वास का वर्ष प्रवेद के भागे वर्ष है । स्वास का वर्ष प्रवेद के भागे वर्ष है । स्वास का वर्ष प्रवेद के भागे व्यव के भागे वर्ष प्रवेद के भागे व्यव के भागे व्यव

त्राकाषायनी मतं ॥ १९॥ त्रको क्रावा तिष्ठरा खं नार यथ्य राद्रा । क्रोक मं ना का को दे बाइ खे वाष्ट्र मो मनु ॥ १०० ॥ न मो दे व्या पिका को का पंच मं ना प्रकी तिता ॥ वियोद रो व मं ना खार्च दे वी या दे यो प्रच ॥ १०० ॥ १०० ॥ पिका कि को को भा यं ता की खं मं न का मा असे । एवः को का का मे न कि मं न को कर्म प्रचा विका को के के के का का को में न कि मं न को कर्म प्रचा विका को के के के का का में न कि

बेर पंत्रवेस प्रतिख्या। का वारे वीसर्वभागे प्रतिख्या वित्राहिता। नमस्यो प्रतिख्या वित्राहिती मर्गी नमस्यो दिनि प्रतिहिती प्रत्रिश्वरः।। अष्टा श्वरतिवित्ते नमस्यो नमन मः।। १०००। एवं विवे प्रतिक्षाको से ये प्रतिक्र प्रदेशी वित्र प्रदेशी। १००० स्वयो देशे में वे सहसी वित्र प्रदेशी। १००० स्वता खरे विचक्षा का वयं वे व स्विः॥ प्रनः स्वत्र स्वा अवस्ति स्व क्र येत्तः। १०० । द्र ता अवनव स्वा क्रा स्विरके विकाततः॥ चतुः स्वाकी प्रन र्त श्रतः स्वाकी प्रनः श्राचाः॥ श्रोबद्द प्रमिति सातुः च्यापित्र द्या पीकाः॥ श्रोकात्र स्वाचा च्याचा च्ये ए का नृष्टि ना ता धिके॥ इं १। ना धन्ति स हं। १९९। आ सी सा सहसं पो गे एकोन विन स्ता धिके॥ ना ने बतु विने या आ

इतीनां तुपं चमे। अध्या अद्विक्र तु छ पं प्रोक्तं देगा उच्छः सहत्युनः ग्रह्मा वाच्ह यं देवी उवाचि हि ति यं स्था। १००० (हाविं रासाह ति क्षो केष दूष श्याह त यो म ताः। (को निशं सादि विंक्ष जाह ती नो सते म ते।। ।।४२० विंस ति क्षो का मं वक्ष पादे ये काष्य कीर्तिता ॥ सर्व क्षो का मं वक्ष पादे ये काष्य स्थित्र ये ।।४००० च तु विंसा क्षेत्र क्षेत्र ये वे परिकीर्तिते। पंचि विंसा क्षेत्र होते से ना को हु हो से वे परिकीर्तिते। पंचि विंसा क्षेत्र होते यायमंत्राख्यायसम्भाष्यास्वमंत्रीका नेतपात्ष्वाचदयंत्या।।सम्विन्ता तिरेवतमं वसंस्थापकीर्तिताः।।क्या सार्धे वष्टिक्षाकार्यष्टमे प्यायप्रकी तिताः।(एक्स्टिक्षाक्रमंत्राञ्जेत प्र क्षाव्यमंत्रकः।।४६५।जादावकाक्रिक्षे व विष्टिर्मन्तितः।।एकान्यवादि पिक्षेत्रकेर्यक्रम्मीदिताः।।क्याः।ज्याः यन्यममंत्रास्तावं तायमञ्जद्वं।। राजा

-गराराह्यास्तरं चित्रं सहसे खोबरेगाउचरका मेगेजें येत्या प्रकेश केगायभा। एवा चला विं सात स्त्रमं का सा माहितिहरं ॥ अ ध-कोकात्मकं कोका समार्थनामनार्थनार्थना चेतिचेकोनं एवं स्यास्प्रहातिनाः॥ एका दशार्था हत ये हादशा भो का में न काः।। उद्याचन ने ना द्वित नि री ताड़ितः॥भर्गा मार्के डे यु व वे देवा हयमेकाक्षिक्षेत्र। इतिमंजि भगमारं देवीमाहात्मामा चरः॥५७ गेकासायनीत चरिसाप्रोह्मः स्वस रातात्मका आइतिका सानीतं के क स्यातिविनाग्समोशाणा ॥ - जीमाहा उध्मी हे के छि यतां नः 117:11 116011 11011 11011 11011 11011



```
[OrderDescription]
,CREATED=26.08.19 12:16
TRANSFERRED=2019/08/26 at 12:19:52
,PAGES=10
,TYPE=STD
,NAME=S0001535
Book Name=M-738-SAHANSANI MANTRA VIBHAG
ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=0000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=0000003.TIF
,FILE4=0000004.TIF
,FILE5=0000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=0000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
```